23

काशी की पाण्डुलिपि चित्र परम्परा

प्रेम कुमारी श्रीवास्तव

काशी में पाण्डुलिपि चित्रण की परम्परा कब और कहाँ प्रारंभ हुई, यह निर्धारित करना अत्यन्त कठिन है। प्राचीन समय से यहाँ जैन, शैव, शाक्त तथा वैष्णव धर्मों का एक साथ समागम एवं बाहुल्य देखा जा सकता है। जैन धर्म में सचित्र पुस्तकें तैयार करवाना एक धार्मिक कार्य समझा जाता था। यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि काशी में धर्म प्रचार-प्रसार हेतु निश्चित ही सचित्र ग्रन्थों का सहारा लिया गया होगा, जो काशी में सल्तनत युग और मुगल शासन की लूटपाट में बरबाद हो गये।

11वीं से 17वीं शताब्दी तक यहाँ की जनता राजनीतिक उथल-पुथल से ऊब चुकी थी। ऐसे समय में कबीर, तुलसी जैसे भक्त कवियों की रचनाओं ने लोगों को सम्बल प्रदान किया। 15वीं शताब्दी के मध्य सचित्र पाण्डुलिपि की परम्परा धर्म-सम्बन्धी विषयों से हटकर प्रेम-प्रसंग और प्रकृति को चित्रित करने के रूप में विकसित हुई। यह कुलीनवर्गीय आन्दोलन था, जो कोर्ट आर्ट से भिन्न था।[1] इसके प्रमाण हमें 15वीं शताब्दी में काशी की भौगोलिक सीमा में आने वाले जौनपुर में चित्रित 'लौरचन्दा एवं मृगावत्' पाण्डुलिपि तथा चुनार से प्राप्त 'रागमाला' सेट के रूप में मिलते हैं। भारत कला भवन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के संग्रह में इनके उदाहरण उपलब्ध हैं। निजी संग्रहों में भी पाण्डुलिपि चित्रों के उदाहरण प्राप्त होते हैं। जौनपुर के अवकाशप्राप्त प्रो.जगदीश नारायण श्रीवास्तव के निजी संग्रह से 16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के 27 चित्र प्राप्त हुए हैं। इन चित्रों की विषय वस्तु प्रेम प्रसंग व मानवीय भावनाएं हैं। इस प्रकार के आन्दोलन से प्रमुख धार्मिक स्थल, व्यापार का केन्द्र, विद्वानों की नगरी और विभिन्न संस्कृतियों को अपने में समाहित करने वाली नगरी काशी विमुख हो, संभव नहीं। इन साक्ष्यों से काशी में भी राजाओं के संरक्षण में निर्मित सचित्र पाण्डुलिपियों के अतिरिक्त कुलीन और संभ्रान्त, शिक्षित वर्गों ने भी ग्रन्थ-चित्रों का निर्माण कराया होगा, जिसके बहुत कम साक्ष्य उपलब्ध हो सके हैं। संभव है भविष्य में शोध और सर्वेक्षण से ऐसे उदाहरण प्रकाश में आयें।

काशी से जो सचित्र पाण्डुलिपियाँ वर्तमान में उपलब्ध हुई हैं वे अधिकांशतः धर्म से संबन्धित हैं। इन चित्रों में 'रामचरितमानस', 'अध्यात्मरामायण', 'श्रीमद्भागवत्', 'दुर्गासप्तशती', 'शिवपुराण' इत्यादि को चित्रों का विषय बनाया गया है। काशी में चित्रित पाण्डुलिपियों में सन् 1736 ई. की ज्ञान-प्रवाह में संग्रहीत 'हरि चरित भाखा' नामक चित्रित पाण्डुलिपि सबसे प्राचीन है। काशी में चित्रित पाण्डुलिपियों को दो वर्गों में रखा जा सकता है : प्रथम राजाओं के संरक्षण में निर्मित पाण्डुलिपि चित्र और दूसरे कुलीन वर्ग के संरक्षण में निर्मित पाण्डुलिपि चित्र।

राजाओं के संरक्षण में निर्मित पाण्डुलिपि चित्रः

इस वर्ग के सभी चित्र शास्त्रीय शैली के हैं। उनमें कलागत तत्त्वों का अत्यधिक सुन्दर सामंजस्य दिखाई देता है। तत्कालीन राजस्थानी, मुग़ल एवं कम्पनी शैलियों का प्रभाव इन चित्रों में स्पष्ट दिखाई देता है। राजाओं के

संरक्षण में चित्रित पाण्डुलिपियों में कलाकार की निपुणता, शिल्पकारिता तथा कलागत सौन्दर्य अलग से दृष्टिगोचर होता है। विद्यामन्दिर संग्रहालय, रामनगर, वाराणसी और भारत कला भवन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में राजाओं के संरक्षण में सृजित अनेक पाण्डुलिपि चित्र द्रष्टव्य हैं। ऐसे चित्रों में काशी नरेश राजा उदित नारायण सिंह (1795-1835 ई.) के संरक्षण में तैयार की गई 'रामचरितमानस' की चित्रित पाण्डुलिपि विद्यामन्दिर संग्रहालय, रामनगर, वाराणसी में देखी जा सकती है।

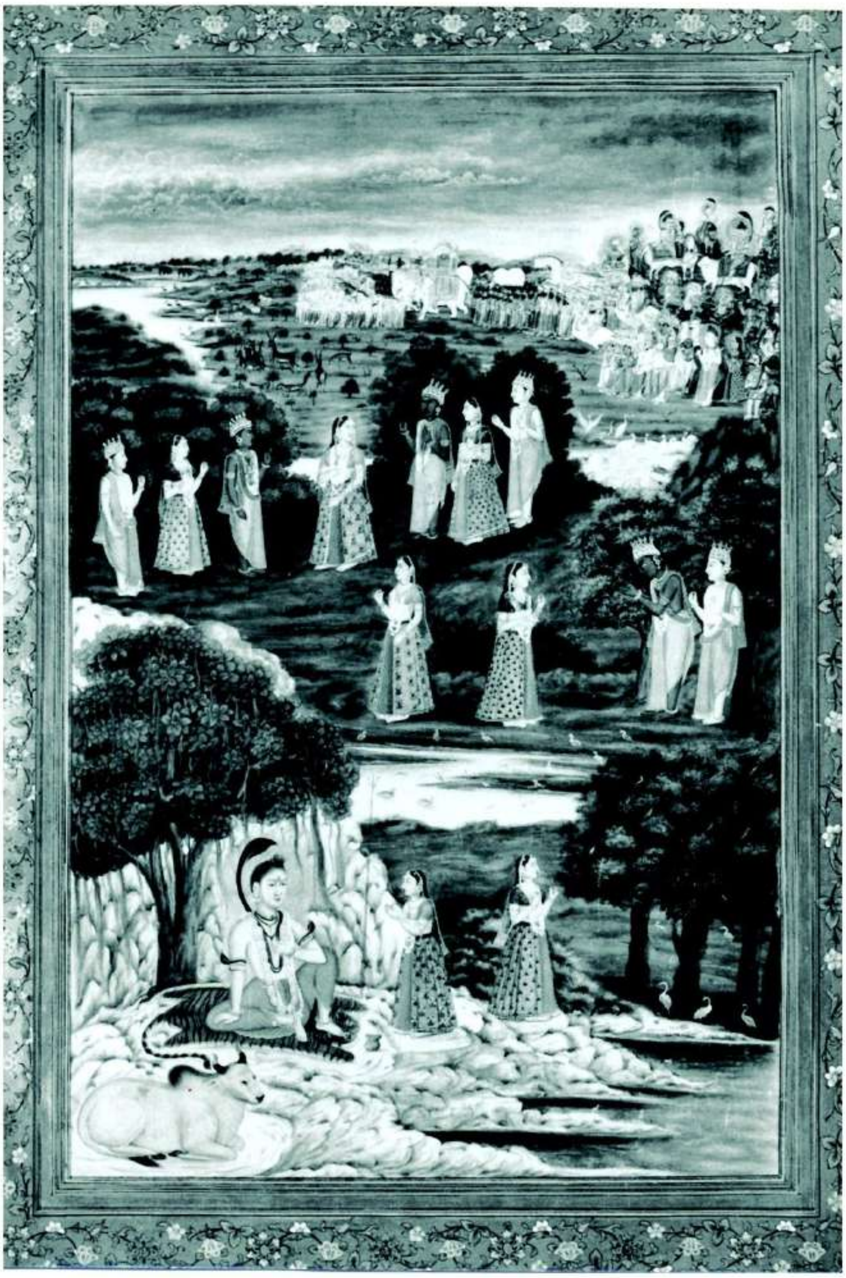

चित्र 1

इस चित्रावली में 'रामचरितमानस' के सातों काण्ड - बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकांड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड के कथानक पर आधारित चित्र सृजित हैं। पाण्डुलिपि की लम्बाई-चौड़ाई क्रमशः (35x25 सेमी) है। पोथी में पाण्डुलिपि का प्रत्येक पृष्ठ अलग-अलग है। कुछ चित्र पृष्ठ के सामने की ओर 'मानस' के दोहे व चौपाई के साथ पूरे पृष्ठ में बने हैं। कुछ पृष्ठों पर सुन्दर और सुस्पष्ट मात्र लेखन है। प्रत्येक काण्ड के प्रथम पृष्ठ पर विभिन्न प्रकार के फूल-पत्तियों का आलेखन है। चित्रावली में 'रामचरितमानस' की घटनाओं को क्रमिक रूप से चित्रित किया गया है। कहीं-कहीं एक ही विषय-वस्तु का संयोजन एक से अधिक प्रकार से भी किया गया है। इस मानस-चित्रावली में 535 चित्र हैं जिनमें बालकाण्ड के 157, अयोध्याकाण्ड के 144, अरण्यकाण्ड के 33, किष्किन्धाकाण्ड के 17, सुन्दरकाण्ड के 32, लंकाकाण्ड के 71 और उत्तरकाण्ड के 81 चित्र हैं। राजा उदित नारायण सिंह के संरक्षण में बनी 'रामचरितमानस' पाण्डुलिपि के चित्रों में आकाश में घुमड़ते बादल, उसमें विचरते 'विमान' अलंकारिक वृक्ष, पशु, पक्षी, जहाँ राजस्थानी शैली की याद दिलाते हैं, वहीं संयोजन व्यवस्था पर अकबर कालीन प्रभाव दिखाई देता है। परिप्रेक्ष्य निरूपण में कुछ चित्रों में कम्पनी कलम और कुछ चित्रों में मुग़ल कलम का प्रभाव दिखाई देता है। कुछ चित्रों में कलाकार ने मुग़ल कलाकारों की भांति विभिन्न नेत्र बिन्दुओं से पूरे धरातल का अवलोकन किया है और अनेक घटनाओं को एक ही धरातल पर समायोजित किया है, जिससे मानसिक परिप्रेक्ष्यजन्य सौन्दर्य और नन्दतिक परिप्रेक्ष्यजन्य सौन्दर्य एक साथ अभिव्यक्त हुआ है। इन चित्रों में घटनाओं और भावनाओं का सुन्दर समन्वय है। सारी आकृति की मुखमुद्रा और गठन को कलाकार ने इस प्रकार निरूपित किया है कि एक ही फलक पर अनेक घटनायें बहुत सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त हुई हैं (चित्र 1)।

भारत कला भवन, वाराणसी के पाण्डुलिपि चित्र

राजा पटनीमल (1770-1844) भारत कला भवन, वाराणसी के संस्थापक, कलामर्मज्ञ रायकृष्ण दास के पूर्वज थे। मुग़ल दरबार से राजा पटनीमल को व्यक्तिगत रूप से राजा की और वंशजों को राय की उपाधि तथा पंचहजारी मनसबदारी प्राप्त हुई थी। राजा पटनीमल का लंबा समय काशी में व्यतीत हुआ। इन्होंने काशी में रहकर अनेक चित्र बनवाये। उनके निजी संग्रह से प्राप्त भारत कला भवन, वाराणसी में 'रामचरितमानस' श्रृंखला के बालकाण्ड के कुल 154 चित्र सुरक्षित हैं। ये चित्र सीता के जयमाल तक से संबंधित हैं। शेष 'रामचरितमानस' चित्रित की गयी अथवा नहीं, चित्रित हुई तो शेष चित्र कहाँ गये आदि तथ्य ज्ञात नहीं हैं।

राजा पटनीमल के संरक्षण में निर्मित 'रामचरितमानस' श्रृंखला के प्रत्येक चित्र अलग-अलग हैं। किसी पृष्ठ में ऊपर, किसी में ऊपर-नीचे और किसी में पीछे की ओर दोहा-चौपाई का लेखन काले रंग से हुआ है (चित्र 2)। शेष स्थान में चित्र हैं। सभी पृष्ठों की लम्बाई-चौड़ाई 18X12 इंच है। प्रत्येक पृष्ठ में चित्रों का आकार अलग-अलग है। इस श्रृंखला के सभी चित्र स्थानीय प्रभावयुक्त मिश्रित मुग़ल और राजस्थानी शैली में बने हैं। कुछ चित्रों में मुग़ल-राजस्थानी चित्रों के साथ कम्पनी शैली का प्रभाव दिखाई देता है। विद्वानों ने इस चित्रावली को 'जयपुर की उपशैली' संज्ञा प्रदान की है।

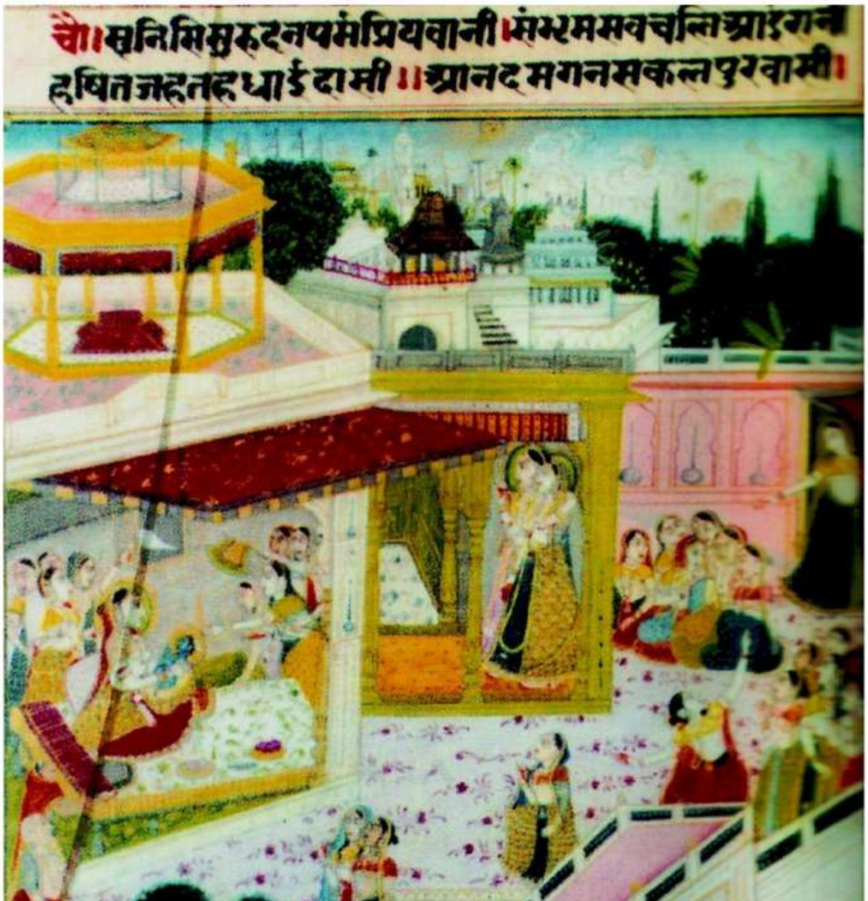
चित्र 2

इस सचित्र पाण्डुलिपि श्रृंखला को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि अनेक कलाकारों ने इसकी पूर्णता में कार्य किया होगा जिनमें से कुछ उच्च कोटि के कलाकार रहे होंगे। कुछ चित्रों में सजीवता, लयात्मकता, रंगों का संतुलन, भावाभिव्यक्ति, रेखाओं की बारीकी, काल्पनिक परिप्रेक्ष्य की सुन्दर अभिव्यक्ति उच्च कोटि के कलाकारों की रचना प्रतीत होती है। आकृति मानव की हो या पशु-पक्षी की, सभी का चित्रण सजीव हुआ है। आकृति का सुन्दर संयोजन चित्र में सहज ही लयात्मकता तथा परिप्रेक्ष्य का भाव उजागर करता है। युद्ध-दृश्य में विशेष रूप से संयोजन व्यवस्था परिप्रेक्ष्य गुण से ओत-प्रोत और सजीव है। इस प्रकार के चित्रों को देखकर कलाकार की कुशलता का आभास होता है। यद्यपि प्रस्तुत पाण्डुलिपि के कुछ चित्र शास्त्रीय नहीं लगते, जिन्हें देखकर सहज ही कहा जा सकता है कि ये चित्र अपरिपक्व कलाकारों द्वारा निर्मित किये गये होंगे। कुछ

चित्रों की आकृति वाराणसी में लोक कलाकारों द्वारा भित्ति पर बनायें जाने वाले आकृतियों से समानता रखती है। संयोजन व्यवस्था में पहाड़ तथा युद्ध-दृश्य में विशेष रूप से अकबर कालीऩ प्रभाव दिखाई देता है। पुष्पाच्छादित वृक्ष राजस्थानी शैली की याद दिलाते हैं।

कुलीन वर्ग के संरक्षण में निर्मित पाण्डुलिपि चित्र

इस वर्ग में काशी के कुलीन, संभ्रान्त, सुसंस्कृतजन और मन्दिरों के महन्तों द्वारा बनवाये गये पाण्डुलिपि चित्र सम्मिलित हैं। काशी में इस प्रकार के पाण्डुलिपि चित्र बहुतायत में हैं, किन्तु वे व्यक्तिगत सम्पत्ति के रूप में अभी दबे पड़े हैं।

वाराणसी से 'दुर्गासप्तशती' की एक सचित्र पाण्डुलिपि प्राप्त हुई है। 1773 ई. की इस पाण्डुलिपि के अन्त में संस्कृत में उल्लिखित संवत् 1830 ज्येष्ठमास के शुक्ल पक्ष की एकादशी, मंगलवार को इसके पूर्ण होने का उल्लेख है। इसके लिपिकार का नाम 'नाथूराम जोशी' लिखा है। सम्भव है कि चित्र भी उन्हीं के द्वारा बनाये गये हों। इस पाण्डुलिपि में कुल 19 चित्र हैं। सम्पूर्ण चित्र को देखकर कहा जा सकता है कि सारे चित्रों की संयोजन-व्यवस्था, आकृति-संरचना, रंग-योजना, रेखाओं का स्वरूप एक जैसा ही है। पाण्डुलिपि 9 इंच लम्बी और 4.25 इंच चौड़ी पुस्तकाकार है। नामकरण के अभाव में विषय वस्तु के आधार पर इसे 'दुर्गासप्तशती' नाम दिया जा सकता है। ऊपर वाली पुस्तक की पाटली पर बिखरे पुष्पों के बीच ब्रह्मा, विष्णु, महेश बने हैं तथा उसके नीचे अग्रभाग में कमल के पुष्प और पल्लवयुक्त सरोवर चित्रित हैं। चित्र के चारों ओर आलेखन युक्त हाशिया है। पाण्डुलिपि के सभी चित्र मात्र कथा चित्र नहीं हैं, वरन् उनमें कलाकार की कल्पनाशक्ति का अभूतपूर्व सम्मिश्रण है, जो कलाकार का निजस्व प्रकट करते हैं। सम्प्रति यह 'दुर्गासप्तशती' पाण्डुलिपि भारत कला भवन में संग्रहीत है (चित्र 3)।

चित्र 3

आर्य भाषा पुस्तकालय नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी के पाण्डुलिपि चित्रः

आर्य भाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी में संग्रहीत विक्रम संवत् 1947 में निर्मित सचित्र पाण्डुलिपि 'गीतापंचरत्न', छः पुस्तकों की एक साथ सचित्र प्रस्तुति है। 'गीतापंचरत्न' के अतिरिक्त 'गणेशभुजंगस्तोत्र', 'श्रीमद्भागवत गीतामूल', 'विष्णुसहस्रनाम', 'भीमस्तवराज', 'मनुस्मृति' और 'गजेन्द्रमोक्ष' सम्मिलित हैं। प्रस्तुत पुस्तक झाँसी के निकट 'पन्ना' स्टेट के अध्यापक श्री सीताराम समारी से रामशंकर याज्ञिक ने प्राप्त किया है। पुस्तक के लेखक द्विजदेव हैं जो मूलतः काशी वासी थे। सम्भव है कि चित्र के निर्माता बनारस के कलाकार हों। चित्रों की आकृति बनारसी चित्रों के समान छोटे आकार वाली है। मुखाकृति शरीर की तुलना में बड़ी है। पाण्डुलिपि में धर्म विषयक कुल 17 चित्र हैं। पुस्तक का आकार 3 X 6 इंच है। पाण्डुलिपि के चित्र कलात्मक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। चित्र विषय वस्तु को प्रकट करने में सक्षम हैं पर उनमें रेखा, रंग, रूप (आकृति निर्माण) में अनुपात का समन्वय उच्च कोटि का नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह सामान्य कलाकार की रचना है।

पीताम्बरा देवी मन्दिर के पाण्डुलिपि चित्र

पीताम्बरा देवी मन्दिर में पुस्तक रूप में सचित्र पाण्डुलिपि के स्थान पर अलग-अलग पाण्डुलिपि चित्र उपलब्ध हैं जिनकी संख्या 132 है। चित्रों की विषय वस्तु से सम्बन्धित श्लोक चित्रों के नीचे लिखे हुए हैं। ये चित्र मन्दिर में विशेष अवसर पर अलंकरण के लिए रखे जाते हैं। इसमें 'भागवत' के पाँचवें स्कन्ध के श्लोक पर आधारित परमब्रह्म के बारह अवतारों के बारह चित्र, 'भागवत' के दशम् स्कन्ध के श्लोक पर आधारित कृष्ण के बाल चरित्र के 62 चित्र, 'दुर्गासप्तशती' श्लोक पर आधारित 58 चित्र हैं। ये चित्र काशी के चित्रकार बटुकलाल और उनके पिता उस्ताद मूलचन्द के द्वारा बनाये गये थे। उस्ताद मूलचन्द और उनके पुत्र बटुकलाल मन्दिर के ट्रस्टी श्री आर.के.नागर के घर में ही निवास करते थे और आजीवन मन्दिर में चित्र बनाते रहे। यहाँ के चित्रों में एक साथ राजस्थानी शैली की अलंकारिकता और मुग़ल कलम की वैविध्यपूर्ण, मिश्रित रंग-योजना, रेखाओं में सफाई और बारीकी तथा छाया और प्रकाश का सुन्दर समन्वय स्पष्ट दिखाई देता है। फलस्वरूप चित्रों में अलंकारिकता और यथार्थवादिता स्वतः आ गई है।

राज्य संग्रहालय, लखनऊ के पाण्डुलिपि चित्र

काशी में निर्मित दो सचित्र पाण्डुलिपियाँ 'अध्यात्मरामायण' और 'श्रीमद्भागवत' राजकीय संग्रहालय, लखनऊ में सग्रहीत हैं (पंजीकरण संख्या 53.263 एवं 56.367)। दोनों ही पाण्डुलिपियाँ पुस्तक रूप में न होकर कागज के रोल (वर्टिकल स्क्रोल) पर लिखी गई हैं और बीच-बीच में चित्र बनाये गये हैं। दोनों ही पाण्डुलिपियों की भाषा संस्कृत है। 'अध्यात्मरामायण' में दोनों ओर पतला हाशिया बनाया गया है। हाशिया लहरियादार रूप से फूल, पत्ती और कली द्वारा सुसज्जित किया गया है। दोनों हाशियों के बीच में काले रंग से छोटे-छोटे बहुत सुन्दर अक्षरों में 'अध्यात्मरामायण' लिखा है। लिखावट के बीच में कहीं गोलाकार और कहीं चौकोर आकृति में 'रामायण' के कुछ प्रसंगों को चित्रित किया गया है। पूरी 'रामायण' में कुल 34 चित्र हैं जो किसी एक ही कलाकार द्वारा बनाये गये हैं। चित्र की आकृतियां स्थानीय लोकशैली के शास्त्रीय स्वरूप को अभिव्यक्त करती हैं (चित्र 4)।

'श्रीमद्भागवत' में लालरंग की दो पतली रेखाएँ खींचकर हाशिए का आभास उत्पन्न किया गया है। काले और बीच-बीच में लाल रंग से सुस्पष्ट सुन्दर अक्षरों में 'भागवत्' लिपिबद्ध की गयी है। बीच-बीच में आयताकार चित्र बनाये गये हैं। सभी चित्रों में पृष्ठभूमि सादी है। केवल प्रसंग से सम्बन्धित आकृतियों का लोकशैली में चित्रण मिलता है। सन् 1754 ई. में निर्मित इस पाण्डुलिपि को बनारस निवासी श्री मुन्नीलाल गुजराती से राजकीय संग्रहालय, लखनऊ ने क्रय किया था।

चित्र 4

रामकथा संग्रहालय, अयोध्या के पाण्डुलिपि चित्र

रामकथा संग्रहालय, अयोध्या में काशी में निर्मित 'रामचरितमानस' पर आधारित 26 पाण्डुलिपि चित्र संग्रहीत हैं। यह सारे चित्र अलग-अलग हैं। कागज में आगे की ओर चित्र चित्रित हैं, पीछे की ओर उससे संबंधित श्लोक लिखा है। सभी चित्र लगभग 5 X 8 इंच माप के हैं। इन चित्रों को देखकर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि यह चित्र काशी के लोक चित्रकारों द्वारा चित्रित किए गये हैं। सभी चित्रों में आकृति-संयोजन तथा रंग-संयोजन सामान्य है (चित्र 5 एवं 6)।

चित्र 5

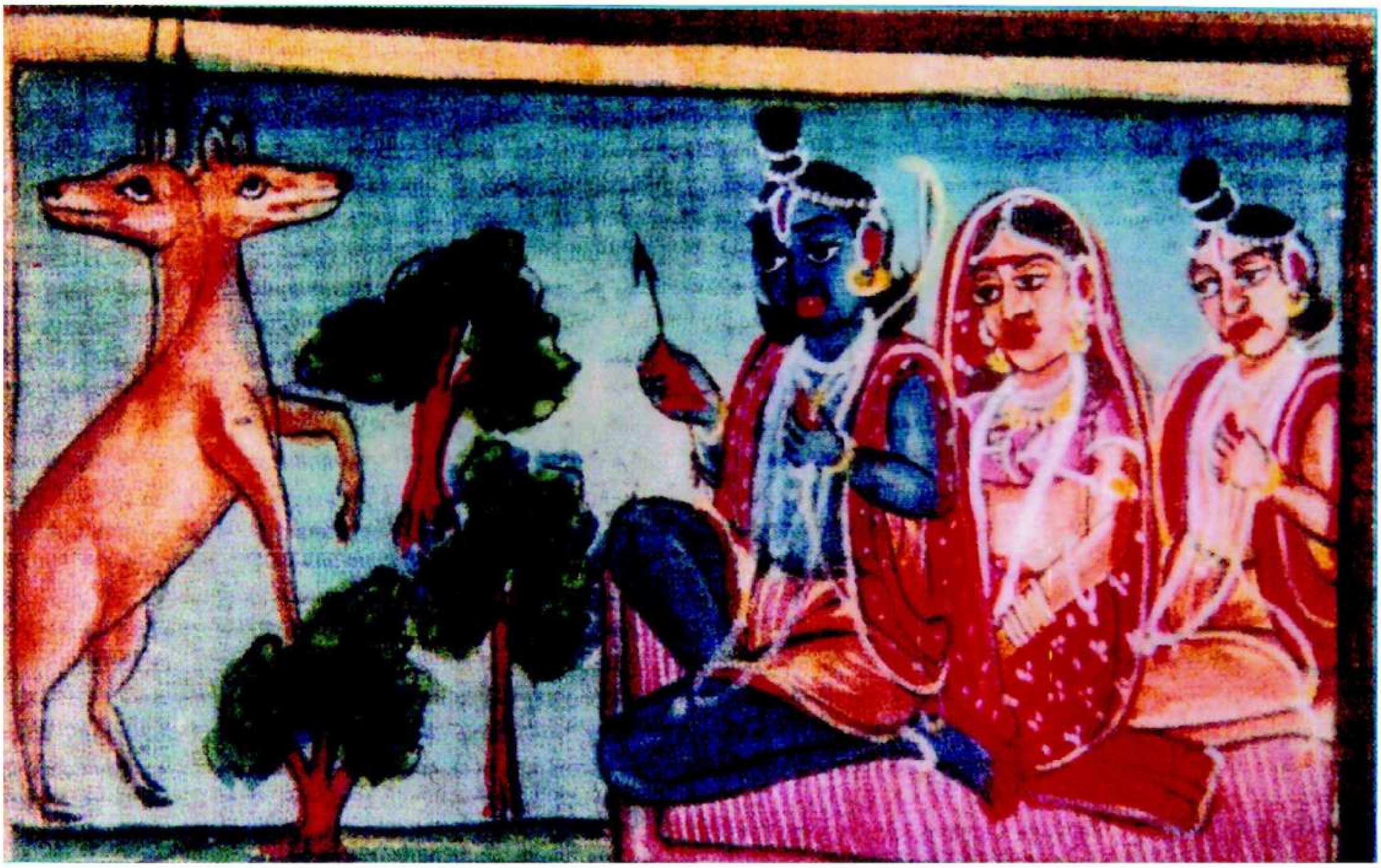

चित्र 6

ज्ञान-प्रवाह के पाण्डुलिपि चित्र

वाराणसी स्थित ज्ञान-प्रवाह संस्था में संवत् 1793 में निर्मित 'हरी चरित भाखा' नामक सचित्र पाण्डुलिपि संग्रहित है। इसके लिपिकार का नाम 'लोचा सिंह ग्वाल' है। पाण्डुलिपि में कुल 423 चित्र हैं। यह पाण्डुलिपि 10X10 इंच की पुस्तकाकार रूप में है। पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर अलग-अलग आकार में चित्र बने हैं। लेखन कार्य काले रंग से सुन्दर अक्षरों में किया गया है तथा पूर्ण विराम के लिए लाल रंग का प्रयोग हुआ है।

इस प्रकार काशी में उपलब्ध चित्रकला के क्रमिक साक्ष्य हमें लगभग दो सौ वर्षों के उपलब्ध हैं। यह असम्भव सा प्रतीत होता है कि सभ्यता के इतिहास की लगभग अकेली, वर्तमान समय की जीवित नगरी काशी में चित्रों का सम्पूर्ण प्राचीन संग्रह लुप्त हो गया हो। पुरानी कोठियों, हवेलियों, ऐतिहासिक महत्त्व के भवनों, परिवारों में आज भी बहुत सारी सामग्री बिना किसी समुचित रख-रखाव के बिखरी पड़ी है। अपने शोध कार्य में मैं अनेक ऐसे व्यक्तियों से मिली जिनके पास ऐसी सामग्री प्रचुर मात्रा में मिलने के संकेत मिले, परन्तु सम्भवतः सरकार के पुरातत्व सामग्री नियमों के भय अथवा साम्रगी की प्राचीनता से जुड़े उसके आर्थिक महत्त्व के बोध के कारण इन सम्भ्रान्त व्यक्तियों ने अपने संग्रह की शोध सम्बन्धी बहुमूल्य निधि को अवलोकनार्थ प्रस्तुत करने में अपनी असमर्थता जताई। 'दुर्गासप्तशती' सम्बन्धित जिस पाण्डुलिपि के चित्रों का शोध-लेख में उल्लेख किया गया है वह चित्रित पाण्डुलिपि में किये गये सर्वेक्षण का परिणाम है। चित्रों के संग्रहकर्त्ता, इतिहास शोधकर्त्ता एवं कलात्मक रुचियों के नागरिक यदि इन्हें प्रकाश में लायें तो भविष्य में काशी की कला का ज्ञान प्राप्त करने में सुविधा होगी।

सन्दर्भ

1. कार्ल खण्डालवाला, द मृगावत ऑफ भारत कला भवन, छवि (वाल्यूम-2), वाराणसी 1981, पृ.26
2. इन चित्रों का उल्लेख कानपुर वि.वि.द्वारा प्रदत्त पीएच.डी. उपाधि हेतु अप्रकाशित शोध प्रबन्ध 'जौनपुर की चित्रकला-एक अनुशीलन' में है।
3. वार्त्ता आर.नागर (पीताम्बरा देवी मन्दिर के ट्रस्टी), सी.के.7/14, सिद्धेश्वरी, वाराणसी।